

89

1-731

I

का श्री नवराज नि ॥ विलरुद महाकावी ककावी
 विरुमानना ॥ कावलाही मरुदाच वायूव गरुयान
 ना ॥ वाक्काच वेकूवी श्रीदी यष्टिका ॥ १० ॥ श्री गंधा
 वावाही नानसिंहा ॥ निवाद्गीच उ० षष्ठी का ॥ १० ॥ द
 दवामगथा निवर्तिगृह्णुमसदा ॥ श्रीचउमधिया
 गिनीर्यावर्तिगृह्णु सर्वसानि कुरुमसिद्धिं कुरु

लुङ्क ३ रुट्त्वाहा ॥ ॥ १० ॥ तिचउः षष्ठीया गिनीव
 लि ॥ ॥ — ६६०३३९ — ॥ ॥
 अधवती सिथ्या गिनीवलि ॥ जें ॥ च वल्लुद्यष्टामहाना
 मा ॥ मूर्खी शुमूर्खीवला ॥ चवती युथमाधावा ॥ श्रीम्या
 हीमामहावला ॥ ज्या थविजया ॥ थैव ॥ अजिगावा
 पना जिगा ॥ महा कटाविचु यादी ॥ शुका मांका

समाष्टका। जागहारी मूसरी वाशु दंडाली स्वस्त्यवनि।
यिपी लीप्यवाहारी शुभानि निसमाहस्यनी ॥ रुद्रका
ली गुह्यदा शुभदागी मागुह्यदीका। द्वाणी समस्तमात्र
रु कलनिकियाल धालणी द्वाणिषु मद्रायागिनी मू
रु मू गुह्यवासनी। वलिगुह्य २ स्वाहा ॥ ॐ गिवती सि
यागिनी वलि समाप्त ॥ ॥ ६६ ॥ ३३ ॥

दिग २
१ शुभमयवलि ॥ ॐ सर्वथा ॥ ॐ यथा ॥ ॐ नि द्वा वाय द्वा व
भवतः ॥ ॐ जाय द्वा र्ग सदाहा सर्व र्ग मी क्ति गा ॥ १ ॥ या गि
नी याग वी वन्द्या ॥ सर्व र्ग समा गता ॥ ॐ सर्व महाय क्ती
ना ॥ ॐ वदामम ॥ २ ॥ ॐ रुद्रका सासन द्वा वी गुह्यदा शु
भवागा। सर्व सिद्धि यसा दाम यवि न यरि यत्सदा ॥ ३ ॥ वी वा
या यागिनी ना ॥ ॐ यवि यनि महा नल यदता गुह्य क्ती
वी समय यम लक ॥ ४ ॥ ॐ निम्ब निमन ॥ ५ ॥ ॐ निम्ब

यास्तुडाविर्ग निकगयन्तु इष्टानां यागिनीगात्रसंकलाशा
 ॥ कद्रुकादिरुखप्राणि इनिमित्तानि इराविन निकगयन्तु
 इष्टानां यागिनीगात्रसंकलाशा ॥ ७ ॥ डाकासादिपूजयीभक्त
 यः सावायुकीर्तिगा ॥ डाषधोदसंदादादिभक्तसंवितामूव
 ॥ ८ ॥ महीयागालवक्त्रा ॥ सर्वकानां तत्र पूजायागिनी
 यागयुक्तात्मा समथनिष्ठुसाधक ॥ ९ ॥ वीवकर्मसुवी
 प्रत्यासत्यनिष्ठुदवगा ॥ सिद्धाप्रपूजकाचार्या साधका
दि ४

पं ५

क २
 ॥ क्रितिसायिन ॥ १० ॥ नगववाधुगामवा जूतयावासवि
 दसवाष्पाकूपरुक्ता ॥ ह्मन्नममाष्टमलुल ॥ १० ॥ नाना
 वृयवनामोमिवरुजाविविधानिय ॥ तत्र सर्वचिसन्तुष्टा
 वलिगृह्णुसर्वत ॥ ११ ॥ नवलगगुहर्गन्यां सर्वभनत्य
 लयुर्द ॥ यालर्द्ययन्मयाकर्मयक्षविश्रामियत्कृत ॥
 १२ ॥ वलिपूष्ययुदानन ॥ संतुष्टाममचिन्ता ॥ सर्वकर्म
 नि सिद्धं सर्वथापा ॥ यन्नाकर्म ॥ १३ ॥ निवर्तकियसा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ॐ कौं यौ चूं रुगवता वूं झूं मूं यं वृं काविकाया निनी वूं
यूं वूं जय वं कं वरी वूं नमः स्वाहा ॥ वं कं वृं
कूं कूं वीर्यामनु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वाणाम् डा ग कि स दिताय नमः ॥ पू ग स्तु वि समनु ॥ ॥

[illegible]

मानवनागवर्णाय नमः । यद्वा द्रव्यधरा । यद्वा जलधरा ॥ यद्वा मा
लाधरा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं सूर्यादीयमहानन्दयणाय नमः ॥ मन्त्रा
मनीयवती ॥ भूमवर्णाय नमः । कर्त्तिकस्वर्णवदवती ॥ यद्वा कर्त्तव्यलक्ष
णधरा ॥ ४ ॥ नागधरा ॥ मन्त्रधरा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं केलीलास्यवदवती ॥ यद्वा
पार्वतीयवती ॥ शिखण्डावती ॥ शिखण्डावती ॥ शिखण्डावती ॥ यद्वा
यम्भोजधरा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं नयनदीपलाय नमः ॥ यद्वा
कालावती ॥ यम्भोजधरा ॥ यद्वा कालावती ॥ यद्वा कालावती ॥

यद्वा जलधरा ॥ ५ ॥ लङ्काधरा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धानन्दयवती
॥ सोमवर्णकाठस्थवती ॥ वक्रवर्णद्विज ॥ शिखण्डकपाल
धरायवती ॥ यद्वा स्वर्णकपालधरा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं वसुगदीय
गुरुगाननकाय नमः ॥ यद्वा विद्यायवती ॥ नीला ॥ यद्वा भूमवर्ण
द्विज ॥ उमवर्णधरायवती ॥ यद्वा कर्त्तिककपालधरा ॥ ६ ॥
गङ्गा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं विमलानन्दनाथविष्णुधरायवती ॥ अम्बिव
र्णद्विज ॥ यद्वा कालावती ॥ यद्वा कालावती ॥ यद्वा कालावती ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वभूतहिते रते ॥ १ ॥
कायदेवी ॥ श्रीं पराशरं हिरण्यं स्वर्णं रुद्रं कथयन्तं यदा
कपालं स्वर्णं गंधं ॥ १ ॥ गिरिपुत्रं विद्या ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
नाथ उन्नतं यदा ॥ श्रीं पराशरं हिरण्यं कपालं धनं यदा यदा
नृपं स्वयं कथयन्तं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गणेशं नृपं दीपयन्ति विद्या
कपालं गवरीयं यदा ॥ श्रीं कवर्णं हिरण्यं पाशं कृष्णं
धनं यदा यदा गणेशं यदा ॥ २ ॥ म ॥ ॐ ह्रीं श्रीं

पालं उन्नतं यदा ॥ श्रीं पराशरं हिरण्यं कपालं धनं यदा यदा
नृपं स्वयं कथयन्तं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गणेशं नृपं दीपयन्ति विद्या
कपालं गवरीयं यदा ॥ श्रीं कवर्णं हिरण्यं पाशं कृष्णं
धनं यदा यदा गणेशं यदा ॥ २ ॥ म ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
पालं उन्नतं यदा ॥ श्रीं पराशरं हिरण्यं कपालं धनं यदा यदा
नृपं स्वयं कथयन्तं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गणेशं नृपं दीपयन्ति विद्या
कपालं गवरीयं यदा ॥ श्रीं कवर्णं हिरण्यं पाशं कृष्णं
धनं यदा यदा गणेशं यदा ॥ २ ॥ म ॥ ॐ ह्रीं श्रीं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

दवीलीयाइकांयुजयामि॥१॥ निमिर्वी॥ वावाहसी देण वर
रेववाय माह लुवी दवीलीयाइकां॥२॥ सुलूदि॥ अकाला
पूवी करण ज वलु रेववाय कोमावी दवी॥३॥ वलिखा॥ अ जपु
होममहा देणाय काध रेववाय वेसू वी दवी॥४॥ न्वसधि॥
जयनि देणाय उ नम रेववाय वावाही दवी॥५॥ टां उल॥
अ वनिमहा देणाय कपाल रेववाय जे दायनी दवी॥

६॥ चिवर्गम॥ अ नकास महा देणाय सीषल रेववाय वा
मूला दवी॥७॥ कनी॥ अ दवीकाट महा देणाय संहार
रेववाय महाल की दवी॥ लीयाइकां॥८॥ सस्रवर्गु
वायुध॥ ॥ नपालमध्य वलु य वि॥ अ सावड॥ अ जा
लंधवपी भय जाली धवान नन्दनाथ जालम्ववी यमावा द
वी॥९॥ वं गुवी॥ अ पुर्ण निविपी भय पुर्ण नन्दनाथ

खट्वांगसकामलुत्तं ॥ गूलमं प्रववेला ॥ गलनीयां वकव
 । मलुत्तं वदु यिवाउ सिनयुपललीषली ॥ गगामुगस्कलाम
 लुत्तं ॥ प्रयागादिदोण ॥ २८ ॥ अग्निगादि २८ ॥ वस्त्राद्यादि २८ ॥
 उक्तिन्यादि २८ ॥ अस्यादि ॥ मध्यपश्चुनासन ॥ गन्मध्य
 उमरुमेवव गुक्तेयमीदवी ॥ ॥ हृदिगुणियुपिगा
 मरुविचविगायां नयालमलुत्तपीठियश्चिकासक ॥ ७॥
 मा

कीठीदोण ॥ कलुजयूथ ॥ कालसला समय ॥ प्रविषाग ॥ पूती
 मंश ॥ दीवयसजा ॥ कालावाहियाग ॥ दिव्यदक्षिणा ॥ वस्त्रा
 यदीदवी ॥ चै ॥ अग्नि ॥ प्रयागदोण ॥ उद्वन्ववदुदवायुवदवी
 धजइकाययव ॥ नद्वगयालायवाइकायुजयामि ॥ २८ ॥
 गिमित्वं ॥ चयस्वान ॥ वंगलला समय ॥ ध्याययाग ॥ यया
 मंश ॥ युवाकिजा ॥ युवावाहियाग ॥ उद्वदक्षिणा ॥ माइव

वीथवा॥मनु॥नं॥५॥यू॥यू॥ना॥दा॥प॥य॥उ॥वा॥थ॥वी॥ध॥नि॥ध॥न॥द॥
ग॥या॥ला॥य॥या॥इ॥का॥जा॥३॥२॥स॥लु॥०॥क॥ग॥॥या॥ग॥ली॥ख॥ान॥॥थ॥
ल॥ला॥स॥म॥य॥॥म॥र॥न॥या॥ग॥॥न॥द॥लि॥म॥र॥॥व॥ग॥मि॥लि॥वा॥क॥जा॥॥
भा॥ग॥वी॥दि॥या॥ग॥॥या॥ह्म॥द॥दि॥क्ष॥॥को॥म॥वी॥थ॥वा॥॥म॥नु॥॥नं॥५॥यू॥
का॥ला॥गि॥व॥क्ष॥ग॥॥अ॥ग्नि॥क्ष॥ग॥या॥ल॥या॥इ॥का॥जा॥३॥॥ब॥लि॥ख॥ा॥व॥
क्ष॥ग॥॥म॥लि॥ख॥ान॥॥व॥न॥य॥ल॥ला॥स॥म॥य॥॥या॥न॥या॥ग॥॥ल॥इ॥

वा॥म॥र॥॥॥खि॥वि॥लि॥जा॥॥क॥उ॥रु॥दि॥वा॥दि॥या॥ग॥॥म॥ग्नि॥द॥दि॥क्ष॥
॥वे॥रु॥वी॥थ॥वा॥॥म॥नु॥॥नं॥५॥यू॥॥ध॥न॥द॥क्ष॥ग॥या॥ला॥य॥या॥इ॥का॥
जा॥३॥॥ग॥ल॥शं॥क्ष॥ग॥॥जा॥३॥॥ग॥ल॥ल॥ख॥ान॥॥या॥क॥दा॥स॥
म॥य॥॥स्व॥॥ध॥या॥ग॥॥या॥ग॥म॥र॥॥स्व॥ध॥य॥स॥जा॥॥मा॥स॥व॥दि॥
या॥ग॥॥॥व॥या॥क्ष॥ग॥॥वा॥वा॥दी॥थ॥वा॥॥म॥नु॥॥नं॥५॥यू॥॥वि॥ग॥
॥॥ग॥या॥ला॥य॥या॥इ॥का॥जा॥३॥॥॥॥स॥स॥दि॥क्ष॥॥यू॥॥ग॥॥॥य॥

स्नान॥ आलसत्वसमय॥ अंगीपाण॥ श्वात्रयमन्द॥ काथ्यसजा॥
कलंठवाहिपाण॥ मनिवदद्विष्टा॥ ॐ दायनीयद्वी॥ मनु
॥ ॐ नमो नारायणाय॥ देवपात्राय॥ पादुकांजा॥ ॐ नवनिर्गन्ध
॥ ॐ ॥ अविस्नान॥ अर्धपाण॥ श्वात्रयमन्द॥ धविष्यसजा॥ मन्त्र
वाहिपाण॥ देवनदद्विष्टा॥ यामुमुदद्वी॥ मनु॥ ॐ नमो
विष्णुनिदयी॥ देवपात्राय॥ पादुकांजा॥ १॥ चिन्मन्त्रगुर्वै॥
मी

वठकालीस्नान॥ इलाडयसमय॥ इष्टपाण॥ युलिमन्द॥
विष्णुपात्राजा॥ ॐ कावीहिपाण॥ श्वात्रयमन्द॥ महालक्ष्मी
द्वी॥ मनु॥ ॐ नमो देवपात्राय॥ पादुकांजा॥ २॥
वाक्काद्वी॥ दिव्यगमालस्नान॥ लाङ्कासमय॥ षष्ठ्यस
पाण॥ ॐ दलिमन्द॥ दीव्यसजा॥ शायमन्त्रवाहिपा
ण॥ यश्चयन्त्रयद्विष्टा॥ यमायवकद्विष्टा॥ काथद्वी॥ मनु॥ निज

श्रीवल्लभाय धर्मद्वयी मन्त्रकायक ग्यालाय पादुकां ॥
 २॥ काविनायकु ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 वद्वयवलि ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 गथा लिखित ॥ वंता निम्न ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 स १२५ गुर्वदिन संपूर्ण ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥

१॥ सासादग किमावृत्तं मनुस्वव विद्विषि ॥ खलु नृ विसंयुक्त म
 गस्तुमस्तु चव ग्वावा प्रवयद्विद्विषि मायाग कि काया लिका
 लोपामुद्रा मेरावा मावामक नावदतिरा ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 गस्तुम ग्वावा ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 १॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥
 ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥

ॐ नमो नवग्रहाय ॥ आदित्यादि नवग्रहावलि विधिः ॥ ॥ आदि
त्यया ॥ आदु कथा न १२ न जाथ याव प न आका व न आयाय प न
नति १२ न क च न न न प न प न आदु पुका न ॥ प गाय आदु पु
चा न न प न प तिया दा न स स्वाया ॥ रुगा आदु ॥ अमु विधु प
॥ अ त ज ज म स्वान आदु ॥ आदु यिता उ प ८ ॥ ध नि दू द न काय ॥
म नु ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ वी थ द न धा मि म गा ८ ध न स वा
स ॥ १ ॥ ॐ सामया ॥ तायू के न या न ग न न व १६ न जाथ या

व ह्रीं स आ काल न आयाय अ त ज ज म स्वान गाय पुका न ॥ ध नि
दू द न काय दू द न काय ॥ म नु ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ यी क
लि का ८ स द ग न पि व न गा ८ थ स नि ॐ सा २ ॥ ॥ अ गा व या ॥
लिका ग र्थ ल स र्थ द न या व क न जा ध य स्व था ल न ३ ॥ रु मि जा
का ८ आ या य मा ठ स ०० का प्र का थ न ॥ लू ग व उ स क क ठि थ न ॥ व
ज ज ज म स्वान न क पुका न ॥ ला दा का न काय ॥ आदु यिता न प ३ ॥
म नु ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ मि थ द न द ग न पि व न गा ८ थ स

हीलादाकारं कृतं ॥ वादयिता उच्यते ॥ मन्त्रः ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं स्वा
 हा ॥ याथ दनदं न विवन्ताथ सनिस ॥ १ ॥ ॐ ॥ वादय
 ॥ व्याया लकन जाधूयाव मगल आका नल आ ॥ २ ॥ याय ॥
 नावत धूने हाक कापन नयूय पगार्प हाक ॥ वत जजम सान
 हाक ॥ हीलादाकारं कृतं ॥ वादयिता उच्यते ॥ मन्त्रः ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं स्वा
 हा ॥ याथ दनदं न विवन्ताथ सनिस ॥ २ ॥ ॐ ॥ वादय ॥ शुभो लकन जाधू

यावत्तल्लग्नं जाकाननञ्चायाय॥ म्रुथूसक्कलातथून॥ चैग्रमंग
कापठनथाय, यताघंत॥ अतज्जसस्वानचैग्रमंग॥ धविदूदन
काय॥ क्वेवनि यिगाउयुगु॥ मक्र॥ उँरुँ रूँरुँसादा॥ यंक
लिमदग्ननयिवनं ताथेसनिसा॥ ए॥ वूँ ॐ गुरुवल्लिविधि
४॥ न्तिसमायसिति॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हिसर्वदुष्कारिकदनहनहुँहुँरुँसादा॥ वालकगतवधेकं
थशूनमिरवामकस्यथादया, यातेनयादाववल्लिसगस्यकु

[illegible]

श्रीकान्तकीदवीस्वर्गादि स हि तायस्वपनिवानीय दक्षिण गच्छ नमस्तु
 भगवता विपतयः श्रीकांताय नमस्तु नमस्तु श्रीवत्सलमहादेव
 वायुश्रीकोमानीयनाम्ना अलिवलि विमितमहापूजाष्टक २ वसिष्ठ
 नमस्तु ॥ याम्यवलि ॥ ३ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 श्रीजुमिडिदायः श्रीजुमिडिदायः श्रीजुमिडिदायः श्रीजुमिडिदायः श्रीजुमिडिदायः
 नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

[illegible]

वसिष्ठ उवाच ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः कृष्णाय ॥ नमः रामाय ॥ नमः सत्यजाय ॥ नमः धर्मराज्ये ॥ नमः विष्णवे ॥ नमः ब्रह्माय ॥ नमः इन्द्राय ॥ नमः अग्निाय ॥ नमः वायुनाथाय ॥ नमः पृथिव्याय ॥ नमः सर्वेश्वराय ॥ नमः परब्रह्माय ॥ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
 यजमान नमः ॥ ॐ अथादि ॥ यजमान तस्य अमुक को सनाथः
 श्री कृष्णाय नमः जानि मिथ्यार्थः वाक् ॥ यस्यात्मा जन्म ॥ वा
 यं प्रजापति उवाच ॥ गंगा जल स्नानं ॥ यश्च मुनि स्नानं ॥
 अलि स्नानं ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥ हृष्टि ॥ उज्जम ॥ स्नान ॥ य
 द्मथ ॥ ॥ पट्ट वासन वाय ॥ वति ग्वज्जामला नवति ॥

नवति वा मालका वाय ॥ ॥ यत्प्रसादात् ॥ ॐ अथा
 दि ॥ यश्च नमस्कारं ॥ व्यास ॥ कौर्म अन्नाय रुट ॥ कन
 माधन ॥ कौर्म अर्घु काल्यानिमः ॥ कौर्म मर्कनार्यानिमः
 ॥ कौर्म मध्यमार्थानिमः ॥ कौर्म अनासिका र्यानिमः ॥ कौ
 र्म कनिष्ठा र्यानिमः ॥ कौर्म कवगमपृष्ठकाल्यानिमः ॥
 ॥ कौर्म कवग्यास ॥ ॥ कौर्म कदयाय नमः ॥ कौर्म निमः

[illegible][illegible]

या॥ आवाहनादि धनमृदादयः ॥ ॥ गायत्री नमः
वादि स्वात्म लीयनहाय ॥ ॥ गीतुलयाय ॥ ॥ तना ॥ अहं
याय ॥ ॥ कां कां अर्थयाग सनाय ॥ ॥ कां कां हं हं
हं हं अर्थयाग याय ॥ ॥ कां कां हं हं हं हं
॥ ॥ आवाहनादि धनमृदादयः ॥ ॥ तना ॥ अहं
धनमृदादयः ॥ ॥ यववनिविय ॥ ॥ ॐ श्रीसर्वलो ॥ ॥
वनिविय ॥ ॥ धनमाहनी ॥ ॥ तना ॥ अहं

कथं शोदि ॥ ॥ ॐ ॥ यतासनाय ॥ ॥ नं ॥ अहं ॥ मनाय ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥
अवकवर्णमहावीर्यं दिव्यं दिव्यं दिव्यं ॥ ॥ दकदकमयादि ॥
॥ वामं अहं यनमृदादयः ॥ ॥ महाकायमहावीर्यं ॥ ॥ तना ॥ अहं
नन्दनं ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ ॥ कां कां हं हं हं हं
॥ ॥ महाकायमहावीर्यं ॥ ॥ यतासनाय ॥ ॥ ॐ ॥ कां कां हं हं
॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ ॥ कां कां हं हं हं हं
॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ ॥ कां कां हं हं हं हं

[illegible][illegible]

रुं जी मै जी कालि नी कया नि नी मरुत ल मरुत ल गा य न म ॥ १ ॥
बाहु ना दि ॥ वलि ॥ ॥ ध्वज वला क रु क रु ज ॥ ॥ उं ह सु थो
जा गार २ ॥ सु थो दि ॥ उं ह सु थो नि गी म र्दे व वा य २ ॥ उं ह सु थो न
वा य २ ॥ उं ह सु थो न वा य २ ॥ २ का थ रु व वा य २ ॥ २ उ न म रु न वा
य २ ॥ २ क लाल रु व वा य २ ॥ २ रा य न रु व वा य २ ॥ २ म हा व रु व
वा य २ ॥ २ उं ह सु थो व द्वा य वी ॥ ॥ त्या दि ॥ ॥ उं ह सु थो दि ॥ ॥ ना क वा
न १० ॥ ॥ ह व या दि ॥ ॥ माल का रु ज ॥ ॥ धना व लि था ता स व लि
रु उ का दि ॥ ॥ वा य

विय ॥ उं ज या धु वि ज या ॥ ॥ उं ह सु थो नी वा य ना ठि गा ॥ न टा र
दा ज या रु नी मा क लाल रु व व द्वा क ल रु थ ॥ ॥ दि ॥ ॥ उं ह सु थो नि म रु थो
नि मि छि थो नि म रु थो व व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ
॥ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ
दा रु ना ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ
॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ
॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ ॥ ॥ नी का ल ना रु य उ

ययुनकां कीनि । वाकनीयावनादीय विह्वीगावन
सा जिनी ॥ वंसी साह ग्वरी कीदी कीमारी विस्र वीनथा । वाना
ही । एव साह द्यो कीमारी विस्र वीनथा ॥ ल की दवी म हा यो दी
हि व दूनी व उ य छिका ॥ वंद द व्या म हा यो नि वलि गृद्र
नुम सदा ॥ की की य व स थिया नि नाल्या वलि गृद्र २ रु खा
का ॥ साल का वलि विय ॥ मय वलि पु म न न क ॥ पु य
दा य ॥ मूल म लु न जाय ॥ की ~~कृष्ण~~ जय गृहा व ल

हा ॥ यथा हा कि वान ॥ ॥ धन फल ॥ उ अ ख पु म पु ल मि
उ श्री सर्व ली ॥ ध न लि द व या ॥ उ न मा की म ग्य रा य ॥ उ नि
त्या न न्य व पु न्न सा मि स ग र्ग नी ल म रा ॥ ए व न पृथी कान
वि ना स ना य व रु वु ४ सा हा य ना य ॥ ग न ४ स र्व ता य व म
ध न स्य व न न स र्वानि नू य थ य ४ सा र्य ग्री य व ना त्त डा
वि उ य न द वा ड ग ध्या य क ॥ उ व न्य नी ला दिक कि
ग नि स क ल ध न म लु ताल म रु ग दि न्व सु धि

मकं हां उमच मथ शृलीख ई शूलरुया मि नार्द वधू
कपालक वम वमि व व विवटी काम दं दु स यो क
ल्यानि नशामालि मय विल स किं किं ॥ ८ ॥ वृषे वा द्य ॥ ९ ॥
व ॥ १० ॥ व ॥ ११ ॥ व ॥ १२ ॥ व ॥ १३ ॥ व ॥ १४ ॥ व ॥ १५ ॥
निर्मा सा व क न श क टि लि ग रु रु डी ॥ व क म द व लि का
दि ग्वा सा धी व य ली व ली व लि ग व वा नी ल डी मु न व ली
हं हं हं काल ना वा गि रु व ली वि ज यी का ध वृ यी न मा

मि ॥ ॥ १६ ॥ श्री म निर्मा गि द डी ॥ ग क ॥ १७ ॥ निर्मा गि द डी ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ व ॥ २० ॥ व ॥ २१ ॥ व ॥ २२ ॥ व ॥ २३ ॥ व ॥ २४ ॥ व ॥ २५ ॥
वा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ग म न्धा दि ॥ ॥ २८ ॥ ध न थो मा क ॥ २९ ॥ वा य मृ ज ॥ ३० ॥
न स ल ॥ ३१ ॥ व न सि ध न ग व क ॥ ३२ ॥ वा न न रु व क ॥ ३३ ॥
प्रा य ख ल ना सा य ल कि का र्थी य म ल्य व ॥ ३४ ॥ य मृ क द ल
या ना र्थ ख ल ना ध न सा ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ध ना य गु य म क ल
नी वी क ल ॥ ३७ ॥ व ॥ ३८ ॥ म कान ॥ ३९ ॥ गाय यी क न ॥ ४० ॥

पयुषासायविद्महविश्वकर्मोयधामह ननामकि
 यथादया७॥ धनाकवालेखवाकायावर्मकल्य
 उज्यादि॥ यजमानस्य मनवादि सिद्धिकामनाधु
 हुकोदवायययुहुस्यसदेसीधदय॥ इयगुगुद्रामि
 यवर्गपुद्रायाडययाचिन॥ अस्याबिह्वर्गसि प्रादि
 मुद्रा॥ लवृकादक॥ अगवदयावकवालेखवागया
 वमुद्रायक॥ मूद्राभुनस्याय॥ यगुयामाउकाया॥

न३

यजमाननखानननक॥ ध्यदीयादि॥ कृष्णमहामा
 या॥ अर्गधदि॥ ध्यदीवादि ददिक॥ आयाय्यादिस
 जा ददिक॥ नर्क॥ ॥ वाकिनकायों॥ मगुद्राकाय॥
 मादनीकाय॥ वाकवृजायाय॥ देवाभावादि॥
 आत्माभावादि॥ न्यासलिकाय॥ वलिथय॥ लुप्य
 सादि॥ ॥ यजमानादि आहुवविय॥ समयवियमा
 लिकैकवय ईगमयविय आहुसवियमालका
 * समयकाय आत्मा समयवा ९

१ न ३

कां वलिगृह २ नानि कुरु २ स्वाहा ॥ कौक न्यदीयमना
 रुवादेवी महाविष्णु देव्यालाययाइकां वलिगृह २
 स्वाहा ॥ ध्यान ॥ ५ षड्रुं मधुना वा वा विषा नांग पथा ध
 वी विशग पूजय गिका स्थी वन्दे ई महा भे ववी ॥ थानि
 मूडा के नीव नानमवा यिव लक गयान्मनि ॥ ६ ॥
 म उथाव

१ नं ५ ॐ ॐ ॐ जिगा इ रुवाय बुद्धा वा सहिताय पुया
 गङ्गाधियगय सा मावाय सगलस्य लिवावाय
 ॐ मायुष्य धूपदीपने व शवलिगृह २ स्वाहा ॥ १ ॥
 १ नं ५ ॐ ॐ ॐ वरु रेववाय माहे श्व वी सहिताथ वरु
 वा महा देवाधियगय सां गाय सगलस्य विवावा
 य ॐ मायुष्य धूपदीपने व शवलिगृह २ स्वाहा ॥ २ ॥

^५ व ६ याद जक ^३ नंद ने वाव गा आग्राम ^३ वृ ^३ उष धा ^३ अ
 गवा हकी ॥ अरुवा हा कवुल ^३ शिव ^३ खनु ^३ गमयम
 वच ^३ घ ^३ ला ^३ द ^३ नम ^३ शिव ^३ च ^३ धु ^३ थ ^३ ट ^३ का ^३ न ^३ क ॥ ३
 न गा या ज का ना द ^३ ए ^३ का ^३ ना ^३ अ ^३ रु ^३ ट ^३ ग ^३ न ॥ ३ ट ^३ क ^३ या
 नि ^३ भ ^३ न ^३ व ^३ ला ^३ थ ^३ उ ^३ म ^३ बा ^३ र ^३ र ^३ क ^३ लि ^३ के ॥ ३ ग ^३ नि ^३ का ^३ न ^३ ग ^३ दि ^३ ४
 का ^३ न ^३ थ ^३ धि ^३ या ^३ य ^३ रु ^३ क ^३ रु ^३ थ ॥ ३ वि ^३ ल ^३ सि ^३ हा ^३ र ^३ का ^३ ठ ^३ द ^३
 धन ^३ दा ^३ ना ^३ म ^३ क ^३ लु ^३ धु ^३ पु ^३ च ^३ रु ^३ रु ^३

॥ दका न क ॥

^३ म ^३ ग ^३ रा ^३ स ^३ न ^३ य ^३ ग ^३ न ^३ क ^३ थ ॥ ३ य ^३ ग ^३ न ^३ क ^३ न ^३ व ^३ व ^३ शिव ^३ ल ^३ म्बा ^३ द
 व ^३ व ^३ र ^३ य ^३ रु ^३ क ^३ ॥ ३ लु ^३ क ^३ द ^३ लु ^३ ध ^३ र ^३ ह ^३ ला ^३ द ^३ स ^३ न ^३ रा ^३ द ^३ रु ^३ का
 रु ^३ थ ॥ ३ क ^३ या ^३ न ^३ थ ^३ य ^३ अ ^३ न ^३ मा ^३ सु ^३ ग ॥ ३ य ^३ अ ^३ स ^३ म ^३ हा
 दा ^३ ए ^३ नि ^३ धि ^३ य ^३ म ^३ स ^३ कि ^३ न ॥ ३ य ^३ उ ^३ वा ^३ द ^३ रि ^३ या ^३ क ^३ अ ^३ रे
 म ^३ वा ^३ रु ^३ व ^३ ल ^३ ह ^३ धि ^३ ना ॥ ३ य ^३ उ ^३ क ^३ स ^३ रु ^३ व ^३ य ^३ थ ^३ स ^३ व ^३ धु ^३ का
 या ^३ वि ^३ न ^३ द ^३ ना ॥ ३ अ ^३ ज ^३ वा ^३ दि ^३ मे ^३ हा ^३ द ^३ रु ^३ द ^३ का ^३ वा ^३ ट ^३ न
 स ^३ क ^३ न ^३ व ^३ वा ^३ स ४

१. अथ वृषः षष्ठ्याग्निना। पाले। ॐ जयाव विजया
वै वृ जय निवायना जिगा। न न्या रुद्रा जया गीमा
क नाये वा ष्टका गथा॥ दिव्याग्नि महायाग्नि सिद्धि
याग्नि गणेश्वरी॥ साकिनी काल नाणी च उरु क ना
निमा कवी॥ गङ्गा वा धा षनी वैवस्वता गायन॥

लक्ष्मी ॥ ॥ राखणीचमहानन्दा द्वालामुखितलधेव
 य ॥ यीनायाहसिनिधेव यकलिधुर्जटीतथा । वि
 परकसर्वसिद्धिउद्दिष्टं कौंकागलधेवच ॥ द्वां कालाहा
 दी दार्था धूसा दी कतहयिय । मातंगाकाकदि
 श्वच नथारियुवचानकी ॥ नाकसिधावगादा
 च वकादीविश्वरूपि ॥ जयं कनी नोदूरकागु
 दी